DATE 13.1.25
PAGE No 1

Tender Heart High School, Sec. 33-B, CHD.

कक्षा - आठवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-16 "मित्रता") लेखक - रामचंद्र शुक्ल
भाग-2
पुस्तक - नवतरंग - 8

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

आज हम कक्षा आठवीं की हिंदी साहित्य की पुस्तक नवतरंग - 8 के पृष्ठ-133 पर लिखे पाठ-16 "मित्रता" के द्वितीय भाग को पढ़ेंगे।

बच्चो! पाठ को आगे पढ़ने से पहले यह ज्ञात कर लेते हैं कि पिछले सप्ताह हमने क्या पढ़ा था? पिछले सप्ताह हमने पढ़ा था कि एक युवा पुरुष को घर से बाहर निकलकर मित्र की आवश्यकता पड़ती है। यदि वह मेल-जोल करने वाला है तो उसके कई मित्र बन जाते हैं। मित्रता के चुनाव पर ही उसके जीवन की सफलता निर्भर करती है क्योंकि संगति का प्रभाव हमारे जीवन पर अधिक पड़ता है। इस अवस्था में हम ऐसे समाज में प्रवेश करते हैं जब हमारा मन बहुत कोमल होता है। कहा भी गया है कि गीली मिट्टी को हम जो आकार देना चाहें उसी आकार की मूर्ति बन जाती है। यदि मिट्टी सूख जाती है तो हम उस मूर्ति को दूसरा आकार देना चाहें तो मूर्ति टूट जाती है। इसी प्रकार युवावस्था के के बच्चों को यदि हम अच्छा माहौल अथवा अच्छा वातावरण दें। इसी प्रकार हमारा मित्र भी अच्छा हो जो हमें अच्छी बातें बताए तो अच्छी मूर्ति का निर्माण होगा अथवा वह एक अच्छा इंसान बन जाएगा। यदि वही मित्र गलत मार्ग दिखाए और आस पास का वातावरण भी गलत हो तो उसका स्वभाव गलत हो जाएगा और वह सूखी मिट्टी के समान टूट जाएगा। यदि हम सोच-विचार करके मित्र का चुनाव करते हैं तो हमें भय नहीं रहता परन्तु अक्सर

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

DATE
PAGE No 2

कक्षा - आठवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ - 16 'मित्रता') लेखक - श्री रामचंद्र शुक्ल

युवा बुद्धि से कम काम लेते हैं। वे हँसमुख चेहरा देखकर उसे अपना मित्र बना लेते हैं। मित्र बना लेने का उद्देश्य यह है कि मित्रता से हमारी आत्मशिक्षा का कार्य सुगम हो जाता है। विश्वासपात्र मित्र कठिनाई में हमारी रक्षा करता है। सच्ची मित्रता में वैद्य-सी निपुणता, माता-सा धैर्य और कोमलता जैसे गुण होते हैं। ऐसे गुणों को देखकर ही प्रत्येक युवा को मित्रता करनी चाहिए।

अब मैं पाठ को आगे बढ़ाते हुए पढ़ना आरंभ करती हूँ।

छात्रावास में तो मित्रता की धुन सवार रहती है। मित्रता हृदय से उमड़ी पड़ती है। पीछे जो स्नेह बंधन होते हैं, उनमें न तो उतनी उमंग रहती है, न खिन्नता। बाल मैत्री में जो मग्न करने वाला आनंद होता है, जो हृदय को बेधने वाली ईर्ष्या और खिन्नता होती है, वह और कहाँ! कैसी मधुरता और कैसी अनुरक्ति होती है! कैसा अपार विश्वास होता है! वर्तमान कैसा आनंदमय दिखाई पड़ता है और भविष्य के संबंध में कैसी लुभाने वाली कल्पनाएँ मन में रहती हैं! कैसा बिगाड़ और मेल होता है? कितनी जल्दी बातें लगती हैं और कितनी जल्दी मानना - मनाना होता है। किंतु हमारे युवावस्था के मित्र बाल्यावस्था के मित्रों से कई बातों में भिन्न होते हैं। सुंदर प्रतिभा, मनभावनी चाल और स्वच्छंद प्रकृति, ये ही दो-चार बातें देखकर मित्रता की जाती है; पर जीवन संग्राम में साथ देने वाले मित्रों में इससे कुछ अधिक बातें चाहिए। मित्र केवल उसे नहीं कहते जिसके गुणों की तो हम प्रशंसा करें, पर जिससे हम स्नेह न कर सकें।

बच्चो! इसमें बताया गया है कि छात्रावस्था में मित्र बनाने की धुन अलग ही होती है, जिन मित्रों के साथ उन्हें उनका वर्तमान आनन्दमय तथा भविष्य मनोहर व सुनहरा प्रतीत होता है। इसके विपरीत एक युवा पुरुष की मित्रता, शान्त, दृढ़ और गंभीर होती है। सुंदर रंग-रूप चाल व स्वतंत्र आचार-व्यवहार देखकर बनाए गए मित्र श्रेष्ठता की कसौटी पर खरे नहीं उतरते। एक सच्चे मित्र का कर्तव्य है कि वह हमारा सही मार्गदर्शन करे।

(पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

कक्षा - आठवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-16 'मित्रता') लेखक - श्री रामचंद्र शुक्ल

वह हमारा प्रेम पात्र होना चाहिए, जिसमें एक अच्छे भाई के गुण हों। दोनों मित्रों में सच्ची सहानुभूति होनी चाहिए। जो एक-दूसरे के सुख-दुख को अपना माने, एक के हानि-लाभ को दूसरा अपना हानि-लाभ समझे।

लेखक के अनुसार यह आवश्यक नहीं कि दो मित्र एक ही रुचि के हों। यह ज़रूरी नहीं कि एक ही काम करने वाले अच्छे मित्र बन सकते हैं। मित्र भिन्न रुचि का भी हो सकता है। सबकी अपनी-अपनी प्रकृति अर्थात् स्वभाव होता है। दो भिन्न स्वभाव के मनुष्य में भी मित्रता हो सकती है। लेखक रामचंद्र शुक्ल ने कुछ उदाहरण हमारे सामने रखे हैं; जैसे राम शांत और धीरप्रकृति के थे जबकि लक्ष्मण विपरीत स्वभाव के थे। वे उग्र अर्थात् गुस्सैल स्वभाव के थे फिर भी दोनों भाइयों में घनिष्ठ स्नेह था। दूसरा उदाहरण लेखक ने कर्ण और दुर्योधन का दिया। कर्ण कुंती पुत्र थे और दुर्योधन धृतराष्ट्र के पुत्र थे। दुर्योधन लालची था जबकि कर्ण दानवीर था। उन दोनों की मित्रता बहुत गहरी थी। यह आवश्यक नहीं कि दो मित्र एक ही स्वभाव के हों तभी उनमें मित्रता निभेगी। विपरीत स्वभाव के भी मित्र हो हो सकते हैं। अक्सर लोग अपने से विपरीत स्वभाव के ही मित्र ढूँढ़ते हैं। जो निर्बल है, वह बलशाली को एक मित्र के रूप में पाना चाहता है। जो धीर अर्थात् धैर्यवान है वह उत्साही व्यक्ति को साथ चाहता है। इसी प्रकार जो चिंताशील या परेशान रहता है, वह चाहता है कि उसे ऐसे व्यक्ति का साथ मिले जो खुशमिज़ाज़ हो अर्थात् प्रसन्न रहे।

अब बच्चो, पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ बता रही हूँ।

शब्दार्थ :- खिन्नता - उदासी,
बेधना - छेदना, भेदना
प्रीतिपात्र - प्रेम का पात्र
उदार - दयालु
अनुरक्ति - भक्ति, प्रेम
पथप्रदर्शक - राह दिखानेवाला
प्रगाढ़ - बहुत अधिक
प्रफुल्लित - आनंदित

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

DATE
PAGE No. 4

कक्षा- आठवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-16 'मित्रता') लेखक - श्री रामचंद्र शुक्ल

अब मैं आपको कुछ प्रश्नों के उत्तर लिख रही हूँ। सब याद करेंगे।

प्रश्न क. छात्रावस्था में किसकी धुन सवार रहती है?
उत्तर- छात्रावस्था में मित्रता की धुन सवार रहती है।

प्रश्न ख. बाल मैत्री का महत्व बताओ।
उत्तर- बाल मैत्री में मग्न करने वाला आनंद होता है। हृदय को बेधने वाली ईर्ष्या और खिन्नता होती है। इसके अतिरिक्त मधुरता, प्रेम और अपार विश्वास होता है जो अत्यंत आनंदमयी होता है।

प्रश्न ग. कौन-सी बातें देखकर मित्रता की जाती है?
उत्तर सुंदर प्रतिभा, मनभावनी चाल और स्वच्छंद प्रकृति आदि बातें देखकर ही मित्रता की जाती है।

प्रश्न घ. हम और हमारे मित्रों के बीच कैसी सहानुभूति होनी चाहिए?
उत्तर हम और हमारे मित्रों के बीच ऐसी सहानुभूति होनी चाहिए जिससे दोनों मित्र एक-दूसरे की बराबर खोज-खबर लिया करे। एक-दूसरे की हानि-लाभ को अपनी हानि-लाभ समझे।

प्रश्न ङ. मित्रता के लिए क्या आवश्यक नहीं है?
उत्तर- मित्रता के लिए यह आवश्यक नहीं है कि दो मित्र एक ही प्रकार का कार्य करते हों तथा एक ही रुचि के हों।

प्रश्न च. कर्ण और दुर्योधन के स्वभाव में क्या भिन्नता थी?
उत्तर- दुर्योधन लोभी स्वभाव का तथा कर्ण दानवीर थे।

प्रश्न छ. हम लोग क्या देखकर एक-दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं?
उत्तर समाज में विभिन्नता देखकर हम लोग एक-दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं।

प्रश्न ज. चिंताशील व्यक्ति कैसे मनुष्य का साथ ढूँढ़ता है?
उत्तर- चिंताशील मनुष्य प्रफुल्लित मनुष्य का साथ ढूँढ़ता है।

बच्चो! आज हम पाठ को यहीं समाप्त करते हैं। पाठ के शेष भाग को हम अगले सप्ताह पढ़ेंगे। अब मैं आपको गृहकार्य दे रही हूँ।

गृहकार्य:- मेरे द्वारा कराए गए प्रश्नोत्तर व शब्दार्थ को अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे।

(अंतिम पृष्ठ-4)

धन्यवाद।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner